# मानवीय संविधान का प्रारूप

| | | |
|---|---|---|
| व्यवहार | परिवार | सम्बन्ध मूल्य |
| व्यवहार | परिवार समूह | सम्बन्ध मूल्य |
| व्यवहार | ग्राम स्वराज्य परिवार | सम्बन्ध मूल्य |
| व्यवहार | ग्राम समूह परिवार | सम्बन्ध मूल्य |
| व्यवहार | ग्राम क्षेत्र परिवार | सम्बन्ध मूल्य |
| व्यवहार | मंडल परिवार | सम्बन्ध मूल्य |
| व्यवहार | मंडल समूह परिवार | सम्बन्ध मूल्य |
| व्यवहार | मुख्य राज्य परिवार | सम्बन्ध मूल्य |
| व्यवहार | प्रधान राज्य परिवार | सम्बन्ध मूल्य |
| व्यवहार | विश्व राज्य परिवार | अखण्ड समाज |
| सार्वभौम व्यवस्था | विश्व राज्य सभा | भागीदारी |
| व्यवस्था | प्रधान राज्य सभा | भागीदारी |
| व्यवस्था | मुख्य राज्य सभा | भागीदारी |
| व्यवस्था | मंडल समूह सभा | भागीदारी |
| व्यवस्था | मंडल सभा | भागीदारी |
| व्यवस्था | ग्राम क्षेत्र सभा | भागीदारी |
| व्यवस्था | ग्राम समूह सभा | भागीदारी |
| व्यवस्था | ग्राम स्वराज्य सभा | भागीदारी |
| व्यवस्था | परिवार समूह सभा | भागीदारी |
| व्यवस्था | परिवार सभा | भागीदारी |

ए.नागराज

# मानवीय संविधान का प्रारूप

(राष्ट्रीय आचार संहिता का आधार बिन्दु)

ए.नागराज

प्रकाशक

जीवन विद्या प्रकाशन

श्री भजनाश्रम, अमरकंटक (म.प्र.) - 484886

# मानवीय संविधान का प्रारूप

## राष्ट्रीय आचार संहिता का आधार बिन्दु


लेखक

ए.नागराज

प्रणेता मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्ववाद )

श्री भजनाश्रम श्री नर्मदांचल पोस्ट अमरकंटक
जिला - शहडोल



**जीवन विद्या प्रकाशन**

**श्री भजनाश्रम अमरकंटक (म.प्र.) पिन 484 886**

प्रकाशक :

जीवन विद्या प्रकाशन

श्री भजनाश्रम अमरकंटक (म.प्र.)

प्रथम प्रकाशन : १४ जनवरी १९९४

© लेखकाधीन

# मानवीय संविधान की आवश्यकता क्यों

ए.नागराज

मानव समुदायों में प्रचलित पूर्ववर्ती संविधानों की समीक्षा

## (१) पूर्वावर्ती मान्यता :-

**(क)** रहस्यमय ईश्वर कल्याण तथा मोक्ष-कारक, जीव जगत का कर्ता-धर्ता, परम और सर्वव्यापी है।

**(ख)** ईश्वर को मानते हुए, ईश्वर को जानना संभव नहीं हुआ। फलतः अध्ययन गम्य न होने के कारण प्रश्न चिन्ह बने रहे।

**(ग)** रहस्यमय ईश्वर वाणी अथवा आकाशवाणी के नाम पर प्रस्तुत पावन वचनों वाले वाङ्मय, सर्वोपरि ग्रंथ मान लिए गए। फलस्वरूप वे संविधान के आधार बने, अथवा उन्हें संविधान मान लिया गया। ऐसी ईश्वरवाणी, आकाशवाणी को, विभिन्न देशकाल में, विभिन्न रूपों में, विभिन्न समुदायों ने प्राप्त किया। फलतः परस्पर (विरोधी, विरोधाभासी) ईश्वरवाणियों में प्रश्न चिन्ह बना रहा और मानवकुल सोचते ही रहा।

**(घ)** ईश्वर प्रतिनिधि राजगुरु, देवदूत अथवा ईश्वर का संदेश वाहक गलती नहीं करते हैं, ये सब विशेष हैं, ऐसा मान लिया गया। इनको शत्रुनाशक, दुखहारक सर्व सौभाग्यदायी मान लिया गया। मानने का तरीका भी विभिन्न समुदायों में, विभिन्न प्रकार से रहा। विभिन्न समुदायों में विभिन्न प्रकार से पनपी हुई मान्यता एवं आचरण (रूढ़ी) एक दूसरे के बीच दीवार बनता गया। इनके नाम से पाई गई वाणियों, कहे गए वचनों को वाङ्मय के रूप में पुनीत माना, इससे वह संविधान का आधार हुआ। ऐसी मान्यताएँ समुदायगत सीमा में स्वीकार हुईं। अन्य समुदायों में अस्वीकार हुईं। इस प्रकार अंतर्विरोध और प्रश्न चिन्ह बना।

**(ङ)** ईश्वर अवतारों को समुदायों ने विशेष मान लिया। तत्कालीन जन मानस इस प्रकार से स्वीकारे हुए हैं कि सामान्य लोगों से जो परेशानी दूर नहीं हो पाई उसे (उन सभी असाध्य संकटों को) दूर कर दिया अथवा उन मनुष्यों ने दूर कर दिया। ऐसे मनुष्य को विभिन्न समुदायों ने, विभिन्न संकटों के दूर होने के आधार पर, उन्हें अवतार मान लिया। इस विधि से भी, विभिन्न समुदायों में विभिन्न अवतारों

को मानना और उनके प्रति दृढ़ता अथवा हठवादिता को स्थापित कर लेना और अन्य के प्रति शंका, विरोध, द्रोह, विद्रोह, घृणा, उपेक्षा, शोषण और युद्ध करने के क्रम में चले आए।

अवतारों , ईश्वर प्रतिनिधियों अथवा महापुरुषों के नाम से जो कुछ भी वचन वाङ्मय उपदेश प्राप्त हुआ है उसे उन - उन समुदायों ने संविधान मान लिया अथवा संविधान का आधार मान लिया। उल्लेखनीय बात यह है कि मूलतः सभी समुदाय, अपने-अपने संविधान को परम मानते हैं साथ ही इसे ईश्वर-वचन मानते हैं। इसे हम स्पष्ट रूप में आज भी देख सकते हैं।

## (२) पूर्वावर्ती आधार :-

**(क)** आदि काल से मानव, विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में, जूझता हुआ, एक दूसरे को अथवा, एक परिवार दूसरे परिवार को पहिचानने के लिए, नस्ल को आधार मान लिया। यह अधिकतर मुख मुद्रा पर मान लिया गया। जिससे अनेक समुदायों का अंतर्विरोध सहित पहिचान हुआ।

**(ख)** पुनः विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर ही मनुष्य शरीर का रंग गोरा, काला, भूरा आदि नामों से स्वीकारा गया। यह प्रधानतः चमड़े की रस क्रिया और भौगोलिक परिस्थितियों के संयोग से और वंशानुषंगीय विधि से होना पाया जाता है। इसी के आधार पर परस्पर (पहचान) निर्भर हुआ। इससे तीव्रतम अंतर्विरोध सहित अनेक समस्या और प्रश्न चिन्ह बनता ही गया। अपने परायों की दीवाल और दृढ़ हुई।

**(ग)** पूजा पाठ, प्रार्थना, अभ्यास, आराधना व साधनाओं के आधार पर, समुदायों को पहचानने का प्रयास किया गया। जिसमें अनेक मत, संप्रदाय पंथ, परंपराएँ देखने को मिलीं । जाति, रंग, नस्ल, परंपराएँ पहले से ही रही। इस प्रकार और भी समुदायों का उदय हुआ जिसमें अन्तर्विरोध और सुदृढ़ हुआ। प्रश्न चिन्हों की संख्या बढ़ी। ये सब अपने - अपने आचरण परम्परा को दृढ़ता का रूप देने गए। इन सभी रूढ़ियों को अपने-अपने समुदाय सीमा में स्वीकार किया गया। इन आदतों की विशेषताएँ, हरेक मोड़ मुद्दे में टकराव एवं प्रश्न चिन्ह को बनाता गया। यह सब धार्मिक, राजनीतिक स्थिति की सामान्य समीक्षा रही।



**(घ)** धन के आधार पर, गरीबी अमीरी के असमानता अथवा अधिक विपन्नता को दूर करने के आधार पर आर्थिक राजनीति को प्रयोग किया गया और इसे प्रभावशील बनाने की, विभिन्न देश काल में कोशिशें की गईं अर्थात आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक विषमताओं को दूर करने के लिए अथक प्रयत्न किया गया। उल्लेखनीय बात यह है कि ऐसे भरपूर प्रयत्नों के उपरान्त भी धार्मिक राजनीति पर्यन्त झेले गए, सभी विभिन्न समुदाय चेतना यथावत बना हुआ देखा जाता है और इसी के साथ आर्थिक विषमता के अनगिनत प्रश्न उलझते ही गए। इस प्रकार आर्थिक राजनीति, धन के आधार पर ही, मानव को दास बनाने के कार्य में व्यस्त हो गयी।

**(३) विधि** :- समर और दण्डनीति केन्द्रित शासन, सर्वोपरि विधि माना गया और लोक रुचि का प्रोत्साहन, कल्पना के आधार पर अनेक कार्यक्रम, विभिन्न राज राष्ट्रों में प्रस्तुत किए गये, जिनकी कार्यशैलियों को साम, दाम, दण्ड, भेद के रूप में देखा गया। इन्हीं के सहारे पद, भोग लिप्सा एवं संग्रह सहित, द्रोह - विद्रोह, शोषण के रूप में एक दूसरे के समक्ष परस्पर समुदायों ने अपने को प्रस्तुत किया। यह भी परिलक्षित हुआ कि प्रत्येक समुदाय अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, किसी भी अनीति को, नीति की पोषाक पहना कर, उपयोग करते आया। प्रत्येक शासन, उन-उन समुदाय की जनता को, सुख शांति और यथास्थिति को, संरक्षण करने का आश्वासन देते हुए, विश्वास दिलाते हुए, असफल हो चुके। अर्थात संपूर्ण राज्य राष्ट्र, अपनी सीमाओं में अथवा भू-खण्ड में निवास करने वाले मनुष्य समुदाय में अंतर्विरोध को तथा पड़ोसी देशों के साथ अंतर्विरोध को दूर करने में समर्थ नहीं रहे, आश्वासन अवश्य ही देते रहे।

**(ख)** शक्ति केन्द्रित शासन प्रणाली में, दण्ड प्रक्रिया, यंत्रणा, अर्थदण्ड और प्राण दण्ड के रूपों में होना देखा गया। सभी शासन प्रणालियों को, सदा से ही भय और प्रलोभन के चक्र में घूमते हुए, पलते हुए देखा गया। विभिन्न समुदायों ने अपने - अपने आचरणों को श्रेष्ठ माना; साथ ही वे अन्य लोगों के साथ अंतर्विरोध के साथ, द्रोह, विद्रोह, शोषण और युद्ध से प्रभावित रहे आए। फलस्वरूप मानव समुदाय की परस्परता में अंतर्विरोध रहा और प्रत्येक समुदाय में भी अंतर्विरोध, प्रश्न चिन्ह बनकर खड़े रहा।

## (४) पूर्वावर्ती दर्शन :-

**(क)** रहस्यमूलक, ईश्वर केन्द्रित चिंतन ज्ञान बनाम आदर्शवाद।

इसी के साथ आगम और निगम प्रबंध, मानव परंपरा में स्थापित हुआ है।

**(ख)** अस्थिरता, अनिश्चयता मूलक, तर्कसम्मत वस्तु केन्द्रित चिंतन ज्ञान बनाम विज्ञान। इसके समर्थन में तकनीकी (Technology) एवं प्रौद्योगिकी स्पष्ट हो चुकी है।

## (५) विचारों के रूप में :-

**(क)** द्वन्दात्मक भौतिकवाद ।

**(ख)** संघर्षात्मक जनवाद ।

**(ग)** रहस्यात्मक अध्यात्मवाद है ।

## (६) शास्त्रों के रूप में :-

**(क)** लाभोन्मादी अर्थशास्त्र ।

**(ख)** भोगोन्मादी समाज चेतना ।

**(ग)** कामोन्मादी मनोविज्ञान ।

## (७) योजनाएँ :-

**(क)** धर्मगद्दियों में पापियों को तारना।

**(ख)** स्वार्थियों को परमार्थी बनाना।

**(ग)** अज्ञानियों को ज्ञानी बनाना।

**(घ)** राजगद्दियों में सामूहिक विकास योजना, कार्य योजना।

**(ङ)** ग्राम विकास, खंड क्षेत्र विकास, सर्वजन सुविधा के लिए रोजगार योजना, कार्य योजनाएँ हैं।

**(च)** रोजगार योजनाएँ स्वावलम्बन के उद्देश्य से स्थापित हुई हैं। जिससे आर्थिक विषमता दूर होगी, ऐसी अभीप्सा समाई हुई है। आदर्शों को ध्यान में रखते हुए सभी समुदायों का उत्थान, सुविधा भोग, अति भोग, बहुभोग में रुचि निर्मित करने का, प्रचार तंत्र सहित कार्यक्रमों को देखा गया है। फलस्वरूप गलती और अपराध बढ़े। जबकि कामना है कि मानव कुल में सार्वभौम व्यवस्था, अखंड समाज में भागीदारी पूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व के प्रति, जागृति और प्रवृत्ति हो।



### प्रस्तावित प्रारूपात्मक

# "मानवीय आचार संहिता" का परिचय

## (१) मान्यता :-

**(क)** सत्ता में संपृक्त प्रकृति, अस्तित्व सर्वस्व, नित्य वर्तमान है।

**(ख)** अस्तित्व ही सह-अस्तित्व के रूप में वर्तमान है। इसका मूल रूप सत्ता में संपृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति ही है। यह न तो घटती है और न बढ़ती है।

**(ग)** सह-अस्तित्व में प्रत्येक एक अपने 'त्व' सहित व्यवस्था है और समग्र व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करते हुए देखने को मिलता है । यह मनुष्य के अतिरिक्त संपूर्ण प्रकृति यथा, जीव, वनस्पति तथा पदार्थ रूपों में स्पष्ट है । साथ ही प्रत्येक मनुष्य भी व्यवस्था है एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित करने के लिए उत्सुक है। यह जागृति परंपरा में सफल होता है।

**(घ)** प्रत्येक मनुष्य, जीवन और शरीर के संयुक्त साकार रूप में वैभव व परंपरा ही है।

**(ङ)** समझदारी - जानना मानना, पहिचानना - निर्वाह करना ही ईमानदारी है। यह जीवन सहज वैभव है। जीने की कला के रूप में अखंड समाज और सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करना ही तकनीक है, आचरण है।

**(च)** मानव जाति एक, कर्म अनेक।

**(छ)** मानव धर्म (सार्वभौम व्यवस्था) एक, मत अनेक ।

**(ज)** ईश्वर (व्यापक सत्ता) एक, देवताएँ अनेक ।

**(झ)** धरती एक, राज्य अनेक ।

**नित्यम यातु शुभोदयम्।**

प्रस्तावित प्रारूपात्मक

## "मानवीय आचार संहिता" का परिचय

### (२) आधार :-

**(क)** मानवत्व = मानवीय शिक्षा = मानवीय संस्कार = मानवीय संस्कृति = मानवीय सभ्यता = मानवीय आचरण = मूल्य, चरित्र, नैतिकता और मूल्यांकन = मानवीय विधि = मानवीयता पूर्ण परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था = सार्वभौम व्यवस्था + अखंड समाज = जागृत मानव।

**(ख)** प्रत्येक मनुष्य शरीर यात्रा के आरंभ काल से ही न्याय का याचक, सही कार्य व्यवहार करने का इच्छुक और सत्य वक्ता है। इसे जागृत मानव परंपरा, न्याय प्रदायी क्षमता, सही कार्य व्यवहार करने की योग्यता और सत्य बोध करा देना है। यह सफलता का आधार है।

**(ग)** मानव, मनाकार को साकार करने वाला, मनः स्वस्थता (सुख) का आशावादी है। इसे जागृत मानव परंपरा निश्चित ज्ञान, विचार व जीने की कला में पारंगत बनकर, बनाकर हर परिवार को सफल बनाती है।

**(घ)** प्रत्येक मनुष्य, कर्म स्वतंत्र व कल्पनाशील है। कल्पना शीलता का तृप्ति बिंदु परिवार मूलक सार्वभौम स्वराज्य व्यवस्था है। कर्म स्वतंत्रता का तृप्ति बिंदु स्वानुशासन है। इसे जागृतिपूर्ण मानव परंपरा और कार्यक्रम सहित प्रभावित करना सहज है। इसकी आवश्कता है।

प्रस्तावित प्रारूपात्मक

## "मानवीय आचार संहिता" का परिचय

### (३) विधि :-

**(क)** समाधान केन्द्रित व्यवस्था सह अस्तित्व सहज है। इस क्रम में प्रत्येक मानव परिवार में, से, के लिए, समानाधिकार, अवसर, प्रमाण और मूल्यांकन सहज होना समीचीन है।

**(ख)** मानवीयता पूर्ण आचरण - (१) स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में, (२) तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा के रूप में (३) और सम्बन्धों की पहचान तथा मूल्यों के निर्वाह एवं मूल्यांकन के रूप में, समीचीन है। इसे प्रमाणित करना, कराना और करने के लिए सम्मति देना व्यवहारिक योजना है।



**(ग)** मानवीयता पूर्ण आचार संहिता रूपी संविधान, न्याय प्रक्रिया और परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सार्वभौम रूप में प्रमाण और विधि है। परिवार-मूलक स्वराज्य व्यवस्था, विश्व स्वराज्य व्यवस्था सहज ही सार्वभौम प्रमाण और विधि है।

प्रस्तावित प्रारूपात्मक

## "मानवीय आचार संहिता" का परिचय

**(४) दर्शन:-** अस्तित्व मूलक, मानव केन्द्रित, चिंतन ज्ञान बनाम मध्यस्थ दर्शन, "सह अस्तित्ववाद" मानव में, से, के लिए अर्पित है। यह "मानव व्यवहार दर्शन", "मानव कर्म दर्शन", "मानव अभ्यास दर्शन" और "मानव अनुभव दर्शन" के रूपों में संप्रेषित है।

**(५) विचार :-** अस्तित्व सहज, सह अस्तित्ववाद को संप्रेषित किया गया है। यह स्वयं "समाधानात्मक भौतिकवाद" "व्यवहारात्मक जनवाद" और "अनुभवात्मक अध्यात्मवाद" है। इन वादों की प्रतिज्ञा, सहज रूप में ही, व्यवहार में प्रमाणित होना है।

### (६) प्रस्तावित शास्त्र :-

**(क)** आवर्तनशील अर्थ चिंतन और व्यवस्था।

**(ख)** व्यवहारवादी जन चेतना विधि और व्यवस्था के आधारों पर हष्टापद सम्पन्न मानवीय आचार संहिता की संप्रेषणा है।

**(ग)** मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान शास्त्र, मानवीय संस्कार संपन्न जागृति सहज प्रमाणों से, वैभवित परंपरा, जागृति लक्ष्य को सदा - सदा के लिए निर्वाह करना, सहज और समीचीन है। यही विधि प्रक्रिया और विधान है।

### (७) व्यवहार वादी अर्थात व्यवहार में प्रमाणित होने वाली योजनाएँ :-

**(क) जीवन विद्या योजना** - यह प्रत्येक व्यक्ति में, से, के लिए

स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, करने कराने के आशय को, सफल बनाता है। इससे प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलित उदय होना पाया जाता है। यह प्रमाणित होना, सहज समीचीन है।

**(ख) मानवीय शिक्षा संस्कार योजना** :- यह व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलम्बन-सहज भूमिका को सार्थक बनाता है। इसी से अथवा इसी क्रम में, परिवार-सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन पूर्वक, समृद्धि का अनुभव करना और अखंड समाज सहज न्याय सुलभता पूर्वक अभय और सह-अस्तित्वशील होना, सहज समीचीन है। इसे सार्थक बनाना, सर्वसुलभ करना, मानव सहज जागृति परंपरा का प्रमाण है।

**(ग) परिवार मूलक स्वराज्य योजना का उद्देश्य** :- मानव, जीवन-जागृति सहित, अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सहित न्याय-सुलभता, उत्पादन सुलभता और विनिमय सुलभता को अनुभव कर सके, फलस्वरूप नैसर्गिक संतुलन और जनसंख्या नियंत्रण, स्वास्थ्य संयम, सहज ही सफल होना समीचीन है।

मकर संक्रान्ति, १४ जनवरी १९९४ लेखक : **ए.नागराज**

## मानवीय संविधान का प्रारूप | अध्याय १

सर्वतोमुखी, समाधान सहज, मानवीयतापूर्ण आचार संहिता रूपी, संविधान का प्रारूप मानव में, मानव से, मानव के लिए विचारार्थ अर्पित है।

## नाम :- मानवीय संविधान

**परिभाषा** :- मानवीयता सहज पूर्णता, स्वराज्य, स्वतंत्रता और उसकी निरंतरता को जानने, मानने पहिचानने व निर्वाह करने, कराने और करने योग्य मूल्य, चरित्र, नैतिकता रूपी विधान।

**१-१** :- मानवीयता सहज जागृति व जागृति पूर्णता, अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था पूर्वक परम्परा के रूप में अर्थात् पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में निरंतरता को प्रमाणित करता है। यह करना, कराना,



मानव में, से, के लिए मौलिक विधान है।

**१-२** :- मानव परिभाषा के रूप में "मनाकार को सामान्य आकांक्षा व महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुओं और उपकरणों के रूप में, तन मन सहित, श्रम नियोजन पूर्वक साकार करने वाला, मनः स्वस्थता अर्थात सुख, शांति, संतोष, आनंद सहज अपेक्षा सहित आशावादी है। यह मानव परंपरा में मौलिक विधान है।"

**१-३** :- मानव अपनी परिभाषा के अनुरूप बौद्धिक समाधान तथा भौतिक समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व का श्रोत व प्रमाण है। यह मौलिक विधान है।

**१-४** :- मानव, मानवीयतापूर्ण आचरण जो स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार सम्बन्धों की पहिचान व मूल्यों का निर्वाह: तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा के रूप में मानवीयता की व्याख्या है। यह मानव परंपरा में मौलिक विधान है।

**१-५** :- "मानवीयता पूर्ण आचरण सहजता, मानव में स्वभाव गति है।" मानवीयतापूर्ण आचरण, मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन है। यह मौलिक विधान है।

**१-६** :- " जागृति मानव का वर है । " मानव सहज कर्म स्वतंत्रता का तृप्ति बिंदु स्वानुशासन है । यह परम जागृति के रूप में प्रमाणित होता है । यह मानव परंपरा में मौलिक विधान है ।

**१-७** :- " सार्वभौम व्यवस्था व अखंड समाज, मानव सहज वैभव है।" मानव सहज कल्पनाशीलता का तृप्ति बिंदु, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है। यह मौलिक विधान है।

**१-८** :- "मानवीय-लक्ष्य परम जागृति के रूप में सार्वभौम है।" मानवीयतापूर्ण अभिव्यक्ति, प्रकाशन सहज संप्रेषणाएँ, संपूर्ण आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्यों में समाधान समृद्धि, अभय व सह अस्तित्व रूपी वैभव को प्रमाणित करता है। यह मौलिक विधान है।

**१-९** :- "मानव बहु-आयामी अभिव्यक्ति है।" मानव सहज परंपरा में अनुसंधान, अस्तित्व मूलक मानवीयता पूर्ण अध्ययन, शिक्षा व संस्कार, आचरण व व्यवहार, व्यवस्था, संस्कृति सभ्यता और संविधान ही सहज प्रमाण है। यही मौलिक विधान है।

## जानना मानना = संज्ञानशीलता

## अध्याय २

**२-१ :-** "जागृति पूर्ण संचेतना मानव में, से, के लिए सहज प्रमाण है।" यह जानना मानना है। यही विधान है।

**२-२ :-** अस्तित्व सहज, सह अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवनी क्रम, जीवन जागृति और रासायनिक भौतिक रचना-विरचना को जानना - मानना ही, जागृतिपूर्ण संचेतना है। यही विधान है।

**२-३ :-** अस्तित्व में प्रत्येक अपने 'त्व' सहित व्यवस्था के रूप में तथा समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रकाशमान है। यही जानना-मानना है। यही विधान है।

**२-४ :-** मनुष्य में जानना - मानना, अवधारणा और संस्कार है। अवधारणाएँ - अस्तित्व में जो जैसा है, उसे वैसे ही स्वीकारने की क्रिया है। यह संज्ञानशीलता का वैभव व विधान है।

**२-५ :-** मनुष्य जागृति पूर्वक जितने भी आयामों में (प्रमाणों को) प्रमाणित करता है, वह जीवन संचेतना में समाहित अवधारणाओं को यथावत अभिव्यक्ति और संप्रेषित करने का प्रमाण है। यही विधान है।

**२-६ :-** अस्तित्व ही सम्पूर्ण भाव है। अस्तित्व में मानव भी एक अविभाज्य भाव है। इसे जानना - मानना विधान है।

**२-७ :-** मानव अपने मानवत्व सहित व्यवस्था, समस्त व्यवस्था में भागीदारी होने की "स्थिति और गति" को सह-अस्तित्व में जानना - मानना विधान है।

**२-८ :-** जीवन सहज जागृति, जागृति सहज व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी को जानना - मानना, पहिचानना और निर्वाह करना विधान है।

**२-९ :-** मानव परंपरा भी पदार्थावस्था, प्राणावस्था एवं जीवावस्था के साथ अविभाज्य और सह-अस्तित्व के रूप में जानना मानना विधान है।



## पहिचानना, निर्वाह करना = संवेदनशीलता

## अध्याय ३

**३-१ :-** अस्तित्व सहज, सह अस्तित्व में परस्पर संबंधों को पहिचानना, निर्वाह करना और निर्भ्रम पूर्वक मूल्य और मूल्यांकन करना, कराना तथा करने के लिए सम्मति देना विधान है।

**३-२ :-** मानव व्यापक सत्ता में अविभाज्य स्थिति सहित नियंत्रण पूर्वक कार्य व्यवहारों को पहिचानना, निर्वाह करना विधान है।

**३-३ :-** परस्पर मानव मूल्यों को पहिचानना, निर्वाह करना विधान है ।

**३-४ :-** नैसर्गिक सम्बन्धों, उसकी उपयोगिता, सदुपयोगिता मूल्यों को पहिचानना, निर्वाह करना विधान है।

**३-५ :-** मानवीय सम्बन्धों सहित परिवार में उत्पादन कार्यों की उपयोगिता मूल्य व कला मूल्य को पहिचानना व निर्वाह करना, विधान है।

**३-६ :-** परिवार सम्बन्ध से लेकर, विश्व परिवार सम्बन्ध तक, पहिचानना निर्वाह करना विधान है।

**३-७ :-** मानव सम्बन्ध तथा नैसर्गिक सम्बन्ध की पहिचान, मूल्यों के निर्वाह क्रम ही, समग्र व्यवस्था में भागीदारी होने का प्रमाण है। यह विधान है।

**३-८ :-** परिवार व्यवस्था से विश्व परिवार व्यवस्था तक में भागीदारी होने की संभावना (प्रत्येक व्यक्ति में) जागृतिपूर्ण संचेतना के लिए नित्य समीचीन है। यह विधान है।

**३-९ :-** पहिचानने, निर्वाह करने, संपूर्ण प्रमाण और साक्ष्य, संस्कृति, सभ्यता, विधि और व्यवस्था में एक रूपता के रूप में, वर्तमान होता है। यही निर्भ्रमता पूर्ण मानव समाज की स्थिति और गति है। यह विधान है।

**३-१० :-** सम्पूर्ण मानव परंपरा समाधान, समृद्धि, अभय और सह अस्तित्व की अपेक्षा में ही है। इसे पहिचानना, निर्वाह करना ही, विधान है।

**३-११ :-** मानवीयता पूर्ण आचरण, शिक्षा संस्कार, स्वास्थ्य संयम सहित, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी पूर्वक, सर्वतोमुखी समाधान, पहिचानने और निर्वाह करने के रूप में प्रमाणित होता है। यह विधान है।

**३-१२ :-** परस्पर सम्बन्धों मूल्यों और मूल्यांकनों को पहचानने-निर्वाह करने के क्रम में अभय प्रमाणित होता है। यह विधान है।

**३-१३ :-** परिवार मानव सहज आवश्यकताओं से अधिक उत्पादन कार्य से समृद्धि, प्रमाणित होती है। इसे पहिचानना- निर्वाह करना, विधान है।

**३-१४ :-** मानवीयता पूर्वक प्रत्येक मनुष्य एक व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी होना सहज है। यही सह अस्तित्व का प्रमाण है। इसे पहिचानना निर्वाह करना विधान है।

**३-१५ :-** मानव अपने मानवत्व रूपी स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार को पहिचानना, निर्वाह करना, विधान है।

**३-१६ :-** मानव, मानवीयता को, नित्य उत्सव के रूप में पहिचानना, निर्वाह करना विधान है ।

**३-१७ :-** मानव स्वानुशासन, अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था को पहिचानना-निर्वाह करना, नित्य उत्सव और प्रयोजन सहज रूप में विधान है।

**३-१८ :-** विकास, जागृति, संतुलन व नियंत्रण के अर्थ में परोपकार को पहिचानना, निर्वाह करना विधान है।

## करने कराने योग्य — अध्याय ४

**४-१ :-** जागृत आचरण सहज श्रेष्ठता क्रम में प्रस्तुत प्रस्ताव विधान है।

**४-२ :-** जागृतिपूर्ण पद्धति से प्रस्तुत कार्य योजना विधान है।

**४-३ :-** श्रेष्ठताएँ, मानवीय शिक्षा संस्कार, आचरण, व्यवस्था व व्यवहार में विधान है।

**४-४ :-** जागृति के प्रमाणों के रूप में शिक्षा संस्कारों में श्रेष्ठता विधान है।



**४-५ :-** मानवीयता पूर्ण परिवार मूलक, स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी सहज श्रेष्ठताएँ विधान हैं।

**४-६ :-** मानवीयतापूर्ण परिवार , विश्व परिवार क्रम में, भागीदारियों में श्रेष्ठताएं विधान हैं ।

**४-७ :-** मानवीयतापूर्ण आचरण और उस में श्रेष्ठता विधान है।

**४-८ :-** अस्तित्व मूलक, मानव केन्द्रित, चिंतन ज्ञान में समृद्धिकरण और श्रेष्ठता विधान है।

**४-९ :-** मानवत्व को अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाणित करना कराना, आवश्यक एवं विधान है।

**४-१० :-** मानवीयता पूर्ण मानसिकता, विचार शैली, आशय व निर्णय जानने मानने पहिचानने व निर्वाह करने के क्रम में प्रमाण व जागृति है। यह विधान है।

**४-११ :-** जागृति का श्रोत, संभावना व उपलब्धि, अस्तित्व में, से, के लिए है। यह विधान है।

**४-१२ :-** जागृति सहज कार्यक्रम, मानवीयतापूर्ण शिक्षा संस्कार, प्रचार प्रदर्शन व प्रकाशन है। यह विधान है।

**४-१३ :-** जागृति सहज गति, मानवीयतापूर्ण संस्कृति और सभ्यता है । यह विधान है ।

**४-१४ :-** जागृतिपूर्ण स्थिति व गति, मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान है। यह विधि व विधान है।

**४-१५ :-** जागृति का वैभव, स्थिति व गति का संयुक्त रूप ही अखंड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था है। यह विधान है।

**४-१६ :-** जागृति का प्रयोजन स्वराज्य एवं स्वानुशासन है। यह विधान है।

**४-१७ :-** जागृति का स्वरूप मानवीयता पूर्ण मानसिकता, विचार शैली, अनुभव बल, जीने की कला और सहज निर्णय के रूप में है। यह विधान है।

**४-१८ :-** अस्तित्व सहज आवर्तनशीलता को, पूरकता और उदात्तीकरण प्रणाली सहित उपयोगिता, सदुपयोगिता और प्रयोजनशीलता क्रम में जानना मानना, पहिचानना व निर्वाह करने के लिए प्रस्ताव रखना विधान है।

# विधान | अध्याय ५

## जागृति सहज मानव समाज गति = विधान

**५-१** :- अस्तित्व में मानव, विकास और जागृति, नित्य सहज होने के कारण, अस्तित्व में जागृति स्रोत के रूप में वर्तमान है। मनुष्य ही जागृत होता है। जागृति पूर्वक ही मानव, मानवीयता पूर्ण पद्धति, प्रणाली, नीति को जानता मानता, पहिचानता एवं निर्वाह करता है। यही जागृति का प्रमाण है। यह विधान है।

**५-२** :- जागृतिपूर्वक ही मानवीयतापूर्ण आचरण-स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष व दयापूर्ण कार्य व्यवहार; तन, मन रूपी अर्थ का सदुपयोग तथा सुरक्षा; और सम्बन्धों की पहिचान व मूल्यों का निर्वाह प्रमाणित होता है। मूल्यों का निर्वाह करना, कराना, करने के लिए सम्मति व सुझाव देना प्रमाणित होता है। यह मानव परंपरा सहज विधि विधान है।

**५-३** :- परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी, न्याय, सुरक्षा कार्य में, उत्पादन कार्य में एवं विनिमय कार्यों में सम्पन्न होता है। यह विधि विधान है।

**५-४** :- जागृति पूर्वक ही मानव, मानवीयतापूर्ण शिक्षा संस्कार कार्यों को सम्पन्न करता है। यह विधि विधान है।

**५-५** :- मानव परंपरा, जागृतिपूर्वक स्वास्थ्य संयम कार्यों को सफल बनाता है। यह विधि है।

**५-६** :- जानना मानना = **समझदारी**<br>
पहिचानना निर्वाह करना = **ईमानदारी** } = **जागृति**

**= विधि विहित** = अस्तित्व सहज नित्य वर्तमान

= सह अस्तित्व, विकास, जीवन, जीवन जागृति, रासायनिक भौतिक रचना व विरचनाएँ। ये जानने मानने के लिए वस्तु विधान है।

**५-७** :- मानव ही सर्वाधिक अथवा परिपूर्ण जागृति क्रम में है। जागृति पूर्णता समीचीन है। इसे प्रमाणित करना विधान है।

**५-८** :- मानवीयता पूर्ण समाज व्यवस्था में निष्ठा, समग्र नैसर्गिक व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित होता है । यह विधान है।

**५-९** :- जागृत समाज गति, कायिक वाचिक, मानसिक कृत कारित एवं अनुमोदित प्रकारों में व्यवहृत होना प्रमाणित होता है। यही सार्वभौम लक्ष्य को पाने में नित्य स्रोत है। यह विधान है।

**५-१०** :- जागृत मानव समाज परंपरा में किए गए, कार्य व्यवहार



का फलन ही सार्वभौम लक्ष्य रूपी समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व है। यह मानव सहज विधान है।

**५-११** :- अनुमोदित क्रियाएँ, सम्मति के रूप में प्रमाणित हैं। आवेदन के उपरान्त ही अनुमोदन जिसको मिलता है, उनमें कार्य करने का प्रेरणा बल, बढ़ता हुआ देखने को मिलता है। यह जागृति प्रधान अथवा जागृति पूर्ण अभिव्यक्ति है । जागृति का मूल्यांकन विधान और प्रक्रिया है ।

**५-१२** :- सलाह, आश्वासन, उपयोगिता, सदुपयोगिता के आधार पर आवश्यकता के अर्थ में होना पाया जाता है। यह जागृति प्रधान प्रक्रिया है। इसमें जागृति का मूल्यांकन विधान और प्रक्रिया है।

**५-१३** :- प्रचार, प्रदर्शन, प्रकाशन, जागृति मूलक सार्वभौम लक्ष्य, सफलता में, से, के लिए अर्पित होना सहज है। इसका जागृति के आधार पर मूल्यांकन, विधान और प्रक्रिया है।

**५-१४** :- करना, जागृति के अर्थ में कायिक, वाचिक, मानसिक रूप में ही सम्पन्न होना पाया जाता है। यह जागृति व निष्ठा का संयुक्त क्रिया कलाप है। इसे जागृति व निष्ठा के आधार पर मूल्यांकन, विधान व प्रक्रिया है। कराना मानव सहज कार्य है। यह जागृति और निष्ठा सहज क्रिया कलाप, तन, मन, धन के आधार पर प्रतिष्ठित है। यह निष्ठा, जागृति और साधनों के आधार पर सम्पन्न होना पाया जाता है। इसे निष्ठा, जागृति, समाधान के आधार पर मूल्यांकन विधान और प्रक्रिया है।

**५-१५** :- जागृति पूर्वक कृत, कारित व अनुमोदित प्रकारों से कायिक, वाचिक, मानसिकता को मानव ही परंपरा के रूप में शिक्षा, संस्कार, संविधान व राज्य व्यवस्थाओं में प्रायोजित, नियोजित, निक्षेपित और गतित करने के लिए अर्पित होता है। यह विधान मूल्यांकन प्रक्रिया है।

**५-१६** :- मानव अपने जागृति सहज, प्रमाणों सहित पीढ़ी से पीढ़ी को, शिक्षा को अर्पित करना, शिक्षित व्यक्ति में सार्वभौम लक्ष्यों के प्रति निष्ठा बोध सहित प्रमाणित होना, विधान है।

**५-१७** :- अस्तित्व मूलक, मानव केन्द्रित चिंतन, जीवन विद्या और रासायनिक भौतिक रचना, विरचना सहज शिक्षा संस्कार, मानवीय शिक्षा संस्कार के रूप में विधि और प्रक्रिया है।

**५-१८** :- मानवीय शिक्षा संस्कार सहज सार्थकता, परिवार मूलक स्वराज्य और स्वानुशासन के रूप में सह-अस्तित्व सहज व्यवस्था है। इसे प्रमाणित कर देना विधि और प्रक्रिया है।

**५-१९** :- मानव ही अस्तित्व में दृष्टा पद में प्रतिष्ठित होने के

आधार पर मानवीय शिक्षा पूर्वक; समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व, अस्तित्व सहज, सहअस्तित्व में प्र णित होता है। इसे प्रमाणित करना विधि और प्रक्रिया है।

**५-२०** :- मानव ही कालवादी, क्रियावादी व निर्णयवादी समझदारी को और जीवन का अमरत्व, शरीर का नश्वरत्व व व्यवहार के नियम रूपी समझदारी के अविभाज्य रूप में अभिव्यक्ति संप्रेषणा, प्रकाशन करना विधि और प्रक्रिया है।

**५-२१** :- उत्पादन में नियम, व्यवहार में न्याय-व्यवस्था में समाधान, स्वानुशासन में सत्य, अस्तित्व सहज, सह अस्तित्व में, प्रमाणित होता है। इसे प्रमाणित करना, विधि और प्रक्रिया है। जीवन विद्या सहज जागृति सम्पन्न मनुष्य स्वयं व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करना सहज है। इसे प्रमाणित करना विधि और प्रक्रिया है।

**५-२२** :- परिवार मानव में, से, के लिए, समझा हुआ को समझाना, सीखा हुआ को सिखाना, सहज है। इसे अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाणित कर देना ही विधि और प्रक्रिया है।

**५-२३** :- मानवीयता पूर्ण संस्कार परंपरा में, जीवन जागृति पूर्वक सर्वतोमुखी समाधान, प्रामाणिकता में, से, के लिए, निष्ठा कर्तव्य व दायित्वों को स्थापित करना व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलम्बन के प्रति निष्ठा और दिशा स्थापित करना, मानवीय शिक्षा संस्कार परंपरा की सार्थकता है। यह विधान है।

**५-२४** :- नाम संस्कार को सम्बोधन और पहचान के अर्थ में; कर्म संस्कार को उत्पादन के कर्तव्यों और दायित्वों के रूप में; व्यवहार संस्कार को सम्बन्ध मूल्य और मूल्यांकन के रूप में, व्यवस्था संस्कारों को सर्वतोमुखी समाधान, जागृतिपूर्ण स्थिति, गति स्वानुशासन के रूप में, सत्य संस्कार को स्थापित कर लेना ही मानवीयता पूर्ण संस्कार है। यह विधान है।

**५-२५** :- मानवीयतापूर्ण शिक्षा, संस्कार, अखंड समाज के रूप में होने वाले कार्य व्यवहार, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में, सम्पन्न होने वाले व्यवहार कार्य, मानवीयतापूर्ण आचरणों के रूप में, सम्पन्न होने वाले व्यवहार कार्य आवश्यकता से अधिक उत्पादन में नियोजित श्रम कार्य, विनिमय कोष गति में सम्पन्न होने वाले श्रम व्यवहार कार्य, स्वास्थ्य, संयम, सुरक्षा में प्रायोजित होने वाले विवेक व विज्ञान सहित, नियोजित होने वाले, श्र कार्य व व्यायाम, उत्साह और उत्सव का प्रचार, प्रदर्शन व प्रदर्शन कार्यों के रूप में, साहित्य सृजन कार्य, विधान है।

**५-२६** :- अस्तित्व संपूर्ण दृश्य, दृष्टि सहित मानवीयता अर्थात जानने मानने, पहिचानने व निर्वाह करने के रूप में न्याय, धर्म, सत्य,



दृष्टियों की क्रियाशीलता सहित दर्शक और दर्शन करने वाले के रूप में क्रियाशील रहना विधान है। यही सर्वोपरि प्रयोजन भी है।

**५-२७** :- दर्शन क्षमता प्रत्येक मनुष्य में समान रूप से विद्यमान है। सम्पूर्ण दृश्य नित्य रूप में वर्तमान विधान है। मनुष्य में दर्शन, योग्यता, पात्रता को विकसित कर देना, जागृत मानव परंपरा का प्रमाण है। यह विधान और प्रक्रिया है।

**५-२८** :- मानवीयतापूर्ण समाज परंपरा में दर्शन मूलक (अनुभव मूलक) विचार शैली स्वयं मानववाद होना अर्थात समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद, अनुभवात्मक, अध्यात्मवाद प्रमाणित होता है। यही विधान है।

**५-२९** :- जानने मानने का तृप्ति बिंदु, अनुभव के रूप में, अभिव्यक्त होना, मानव संचेतना सहज जागृति का प्रमाण है। यही मध्यस्थ दर्शन का स्रोत है और सह अस्तित्ववाद शैली है। यह मानव संचेतना सहज विधान है।

**५-३०** :- जागृति सहित मानव, संचेतना सहज अनुभव बल, विचार शैली, जीने की कला में मानवत्व सहित स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकारों को प्रमाणित कर देना, मानवीयता पूर्ण मानव परंपरा सहज वैभव है। यह विधान है।

**५-३१** :- मानव मानवीयता पूर्ण अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन का प्रमाण है। यह विधान है।

**५-३२** :- अस्तित्व में परमाणु में विकास और संक्रमण पूरकता विधि से सम्पन्न होती है। अणु और अणु रचित रचना, उदात्तीकरण विधि से सम्पन्न होते हैं। रचनाओं की विरंचना भी पूरकता के आधार पर सम्पन्न होती है। संक्रमण की विगति नहीं होती, जीवन पद नित्य हो जाता है। यही परिणाम का अमरत्व है। फलतः जीवन, जीवन जागृति दर्शन, दर्शक, प्रमाण सहज विचार शैली, जीने की कला, मानव परंपरा में ही प्रमाणित होता है। यह विधान है।

## राष्ट्रीय आचार संहिता हेतु

## संविधान, सूत्र व्याख्या के आधारं बिंदु

(१) मानवीयता पूर्ण आचरण। (२) मानवीयता पूर्ण व्यवहार।
(३) मानवीयता पूर्ण व्यवस्था। (४) जागृति पूर्ण स्वानुशासन।

## मानव में, से, के लिए विधि -"मानवत्व"

☆ मनुष्य में, से, के लिए मानवत्व, अनुभव का प्रमाण-स्वानुशासन (मानवीयता पूर्ण आचरण, व्यवहार व व्यवस्था में भागीदारी

पूर्वक जागृति के लिए प्रेरणा)

☆ सर्वतोमुखी समाधान में, से. के लिए प्रमाण- "विवेक सम्मत विज्ञान व विज्ञान सम्मत विवेक" (जिसका व्यवहार प्रमाण, समग्र व्यवस्था में भागीदारी)

☆ लोक न्याय सुलभता में, से. के लिए प्रभाव-"अखंड समाज में भागीदारी" (सम्बन्धों की पहिचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन क्षमता की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन)

☆ सार्वभौम रूप में मानवीयतापूर्ण आचरण में, से. के लिए प्रमाण - "मूल्य, चरित्र, नैतिकता की संयुक्त अभिव्यक्ति" (संबंधों की पहिचान व मूल्यों का निर्वाह - तन, मन, धन का सदुपयोग व सुरक्षा - स्व धन, स्व नारी/ स्व पुरुष व दया पूर्ण कार्य व्यवहार (विन्यास)

☆ समृद्धि में, से. के लिए प्रभाव-" परिवार गत आवश्यकता से अधिक उत्पादन" (परिवार गत उत्पादन कार्य में परस्पर पूरक होना)

## मैं अपने में क्या हूँ? कैसा हूँ? व क्या चाहता हूँ ।

- **मैं मनुष्य हूँ :-** मैं मनाकार को साकार करने वाला व मनः स्वस्थता का आशावादी हूँ ।

- मैं ज्ञानावस्था की इकाई हूँ ।

- मैं शरीर व जीवन का संयुक्त साकार रूप हूँ- मानव परंपरा प्रदत्त मेरा शरीर तथा अस्तित्व में परमाणु में विकास फलतः जीवन सहज स्वरूप हूँ ।

- मैं जीवन सहज रूप में, जानने, मानने , पहिचानने निर्वाह करने का क्रिया कलाप हूँ, शरीर रूप में ५ (पांच) ज्ञानेन्द्रियों, पाँच (५) कर्मेन्द्रियों व उसके क्रिया कलापों का द्रष्टा हूँ ।

- मैं मानवत्व सहित व्यवस्था हूँ।

- मैं बौद्धिक समाधान व भौतिक समृद्धि सम्पन्न होना चाहता हूँ।

- मैं जीवन जागृति पूर्ण और उसकी निरंतरता चाहता हूँ, साथ ही श्रम, भय व समस्याओं से मुक्त होना चाहता हूँ ।

- मैं सार्वभौम व्यवस्था व अखंड समाज में भागीदार होने का अधिकारी होना चाहता हूँ और स्वानुशासित होना चाहता हूँ । व प्रत्येक मनुष्य को ऐसा होता हुआ देखना चाहता हूँ।

**- ए. नागराज**

श्री नर्मदांचल, श्री भजनाश्रम

पोस्ट - अमरकंटक, जिला शहडोल (म.प्र.) भारत